मेरी भावना
MY INSPIRATIONS

पं. जुगलकिशोर मुख्तार
Pt. Jugal Kishor Mukhtar

महावीर वाणी

धम्मो मंगलमुक्किट्ठं अहिंसा संजमो तवो।
देवा वि तं नमंसंति जस्स धम्मे सया मणो॥1॥

Religion is supremely auspicious; non-violence, self-control and penance are its essentials. Even the gods bow down before him whose mind is ever preoccupied with religion.

जयं चरे जयं चिट्ठे जयमासे जयं सए।
जयं भुंजंतो भासंतो पावं कम्मं ण बंधइ॥2॥

A person who moves cautiously, stands cautiously, sits cautiously, sleeps cautiously, eats cautiously and speaks cautiously would not be bounded by the evil karmas.

खम्मामि सव्व जीवाणं सव्वे जीवा खमंतु मे।
मित्ती मे सव्व भूदेसु बैरं मज्झं ण केण वि॥3॥

I forgive all living beings forgive me; I cherish feeling of friendship towards all and I harbor enmity towards none.

णमोकार मंत्र
Namokar Mantra

णमो अरिहंताणं
Namo Arihantanam

णमो सिद्धाणं
Namo Siddhanam

णमो आयरियाणं
Namo Ayariyanam

णमो उवज्झायाणं
Namo Uvajjhayanam

णमो लोएसव्वसाहूणं
Namo Loye Savva Sahunam

प्रकाशक / Publisher

वीर सेवा मन्दिर (जैनदर्शन शोध संस्थान)
Vir Sewa mandir (A Research Institute for Jainology)

4674/21, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली-110002 (भारत)
4674/21, Ansari Road, Daryaganj, New Delhi-110002 (India)
Phone: +91-11 30120522, 23250522, 93110-50522
E-mail: virsewa@gmail.com

प्रतियाँ / Copies – 11,000
संस्करण / Edition 2013
English Translated by – **Barrister C.R. Jain (1921)**

पं. जुगलकिशोर मुख्तार

जन्म - 20 दिसम्बर 1877

स्वर्गवास - 22 दिसम्बर 1962

प्राच्यविद्या महार्णव पं. जुगलकिशोर मुख्तार 'युगवीर' भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति के गम्भीर अध्येता और मौलिक चिन्तक थे। आपका अधिकांश समय जैन साहित्य, कला एवं पुरातत्त्व के अध्ययन, अनुसंधान में ही व्यतीत हुआ। आपने महानगरी दिल्ली में वीर सेवा मंदिर की स्थापना में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया और जैन साहित्य, दर्शन, इतिहास और पुरातत्त्व की शोध पत्रिका 'अनेकान्त' का लम्बे समय तक सम्पादन किया। समाज में उठने और चलने वाले प्राय: सभी सुधारवादी या प्रगतिगामी आन्दोलनों से आपका प्रत्यक्ष या परोक्ष सम्बन्ध रहा है। सामाजिक कुरीतियों और भ्रान्त धारणाओं के ये निर्भीक आलोचक थे। आपने 36 से अधिक प्राचीन महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का लेखन एवं सम्पादन किया है तथा 200 से अधिक आलेखों की स्वतंत्र रूप से रचना की है। सन् 1916 में रचित आपकी कृति 'मेरी भावना' सम्पूर्ण राष्ट्र में समादर की दृष्टि से देखी जाती है। यह प्रार्थना किसी धर्म विशेष की न होकर विश्व के सभी धर्मों की समवेत प्रार्थना के रूप में स्वीकार की गयी है।

वीर सेवा मंदिर (जैनदर्शन शोध संस्थान)

महावीर जयन्ती के अवसर पर अनुमोदित प्रस्ताव पर पं. जुगल किशोर मुख्तार ने 21 अप्रैल सन् 1929 को समंतभद्राश्रम की स्थापना की। इस आश्रम से अनेकान्त मासिक शोध पत्रिका का प्रकाशन प्रारम्भ किया। लगभग एक वर्ष बाद इस संस्था का नाम बदलकर वीर सेवा मंदिर कर दिया गया। वहाँ से शोध संस्थान के रूप में जैन साहित्य की विभिन्न शोध प्रवृत्तियों का अनुसंधान और प्रकाशन होने लगा। जैन साहित्य और इतिहास के सम्बन्धों में अन्वेषण करने वाली यह एक प्रमुख संस्था है। 17 जुलाई सन् 1954 में वीर सेवा मंदिर के वर्तमान भवन का शिलान्यास दरियागंज, दिल्ली में संपन्न हुआ। 12 जुलाई सन् 1957 को इसका लोकार्पण किया गया। संस्था का समृद्ध पुस्तकालय एवं सर्वश्रेष्ठ ग्रंथों का भण्डार विद्वानों के अनुसंधान हेतु 28 जुलाई 1961 को समाज को समर्पित किया गया। वर्तमान में ग्रंथालय में प्राकृत, संस्कृत, अपभ्रंश, हिन्दी, अंग्रेजी एवं उर्दू आदि भारतीय भाषाओं की आठ हजार से अधिक प्राचीन एवं नवीन ग्रंथों का संग्रह है। इस पुस्तकालय में 167 हस्तलिखित ग्रन्थ भी हैं जिनमें ज्योतिष, आयुर्वेद एवं इतर धर्म शास्त्रों के विषय गर्भित हैं। इसके अतिरिक्त पुस्तकालय में ताड़पत्रों पर काटों से उकेरे गए हस्तलिखित ग्रन्थ भी सुरक्षित हैं। इस पुस्तकालय में दिगम्बर जैन

ग्रंथों के अतिरिक्त श्वेताम्बर जैन आगम ग्रंथ, वैदिक, एवं बौद्ध साहित्य के अनेक महत्त्वपूर्ण मुद्रित ग्रंथ भी उपलब्ध हैं। संस्था द्वारा महत्त्वपूर्ण ग्रंथों का प्रकाशन समय-समय पर किया जाता रहा है, जिनमें मुख्यत: पुरातन जैन वाक्य सूची, जैन लक्षणावली आदि एवं अंग्रेजी भाषा में बाबू छोटेलाल जैन सरावगी, कलकत्ता द्वारा रचित जैन बिबिलियोग्राफी दो भाग हैं। संस्था के द्वारा 50 से भी अधिक ग्रंथ प्रकाशित हुए हैं। संस्था के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अनेकान्त शोध पत्रिका का निरन्तर प्रकाशन किया जा रहा है। संस्था की साहित्यिक गतिविधियों को मूर्त रूप प्रदान करने में पं. परमानन्द शास्त्री, डॉ. ए. एन. उपाध्ये, पं. बालचन्द्र सिद्धान्तशास्त्री और पं. पदमचन्द शास्त्री का विशेष योगदान रहा है। समय-समय पर अनेक आचार्यों और मुनि महाराजों का आशीर्वाद एवं प्रेरणा संस्था को प्राप्त होता रहा है। यह संस्था और ग्रंथागार जनहित के साथ-साथ शोधार्थियों को भी उपयोगी सिद्ध होते रहे हैं। वीर सेवा मंदिर पुस्तकालय का अनेक भारतीय और विदेशी अनुसंधानकर्त्ता अपने अनुसंधान हेतु लाभ लेने आते रहते हैं। यहाँ आने वाले शोधार्थियों के लिए संस्था में जाति-समुदाय का भेदभाव किए बिना ठहरने और पढ़ने की नि:शुल्क व्यवस्था की जाती है। जैन साहित्य और इतिहास के सम्बन्धों में अन्वेषण करने वाली यह एक प्रमुख संस्था है।

*****

जिसने राग-द्वेष कामादिक,
जीते सब जग जान लिया।
सब जीवों को मोक्षमार्ग का,
निस्पृह हो उपदेश दिया ।
बुद्ध, वीर, जिन, हरि, हर, ब्रह्मा,
या उसको स्वाधीन कहो ।
भक्ति भाव से प्रेरित हो यह
चित्त उसी में लीन रहो।।11।।

Jisne Rag–Dvesh Kamadik
Jeete Sab Jag Jan Liya;
Sab Jeevo(n) Ko Moksh-Marg Ka
Nisprih Ho Updesh Diya.
Buddh Veer Jin Hari Har Brahma
Ya Usko Svadheen Kaho;
Bhakti-Bhav Se Prerit Ho Yeh
Chitta Usee Mei(n) Leen Raho.

His passions who has overcome,
All Nature's secrets who has known,
Salvation's Path to every soul,
Without a motive, who has shown:
Buddha, Vir, Jina, Hari, Har, Brahma,
Or the Self Him you may call:
His attainments may, with devotion deep,
My mind eternally extols!

विषयों की आशा नहिं जिनके,
साम्य–भाव धन रखते हैं।
निज–पर के हित–साधन में जो
निश दिन तत्पर रहते हैं।
स्वार्थ त्याग की कठिन तपस्या
बिना खेद जो करते हैं।
ऐसे ज्ञानी साधु जगत् के
दुःख समूह को हरते हैं।।2।।

Vishayo(n) Ki Asha Nahi(n) Jinke
Samya-Bhav Dhan Rakhte Hain;
Nij-Par Ke Hit-Sadhan Mei(n) Jo
Nish Din Tatpar Rahte Hain.
Svarth-Tyag Ki Kathin Tapasya
Bina Khed Jo Karte Hain;
Aise Gyanee Sadhu Jagat Ke
Dukkh-Samooh Ko Harte Hain.

Pleasures of life who ever despise,
Equanimity's wealth who seek,
Devoted ever to uplift and raise
Themselves and others in every way;
Onward who press on the thorny Path
Of Self-denial, undismayed,
Such saintly sages do relieve
The pain and misery of the World!

रहे सदा सत्संग उन्हीं का,
ध्यान उन्हीं का नित्य रहे।
उन्हीं जैसी चर्या में यह
चित्त सदा अनुरक्त रहे ।
नहीं सताऊँ किसी जीव को,
झूठ कभी नहिं कहा करूँ ।
परधन वनिता पर न लुभाऊँ
संतोषामृत पिया करूँ।।3।।

Rahe Sada Satsang Unhee(n) Ka
Dhyan Unhee(n) Ka Nitya Rahe;
Unhee Jaisee Charya Mei(n) yeh
Chitt Sada Anurakt Rahe.
Nahee(n) Sataoo(n) Kisee Jeev Ko
Jhooth Kabhee Nahi(n) Kaha Karoo(n);
Par-Dhan Vanita Par Na Lubhaoo (n)
Santoshamrit Piya Karoo(n).

Their company may I ever enjoy:
Their thought may life's inspiration be:
The Path illumined by their Feet
I wish to tread reverently!
Untruth I vow never to utter;
Pain to no one may I cause;
Coveting neighbour's wealth nor wife,
Contentment's nectar may I quaff!

अहंकार का भाव न रक्खूँ
नहीं किसी पर क्रोध करूँ।
देख दूसरों की बढ़ती को
कभी न ईर्ष्या भाव धरूँ ।
रहे भावना ऐसी मेरी
सरल सत्य व्यवहार करूँ।
बने जहाँ तक इस जीवन में,
औरों का उपकार करूँ।।4।।

Ahamkar Ka Bhav Na Rakkhoo(n)
Nahee(n) Kisee Par Krodh Karoo(n);
Dekh Doosro(n) Ki Badhtee Ko
Kabhee Na Eershya-Bhav Dharoo(n).
Rahe Bhavna Aisee Meree
Saral Satya Vyavahar Karoo (n);
Bane Jaha(n) Tak Is Jeevan Mei(n)
Auro(n) Ka Upkar Karoo(n).

May pride never puff me up;
Nor anger seize me ever;
The sight of another's luck may not!
Make me envious with his lot!
Fair and square my dealings be,
In all things big and small;
The joy of life for me may lie
In making ever one happy!

मैत्री भाव जगत् में मेरा,
सब जीवों से नित्य रहे।
दीन दुखी जीवों पर मेरे,
उर से करुणा स्रोत बहे ।
दुर्जन-क्रूर-कुमार्ग रतों पर,
क्षोभ नहीं मुझको आवे।
साम्यभाव रक्खूँ मैं उन पर,
ऐसी परिणति हो जावे।।5।।

Maitree-Bhav Jagat Mei (n) Mera
Sab Jeevo(n) Se Nitya Rahe;
Deen-Dukhee Jeevo(n) Par Mere
Ur Se Karuna-Srot Bahe.
Durjan Kroor Kumarg-Rato(n) Par
Kshobh Nahee(n) Mujhko Aave;
Samya-Bhav Rakkhoo(n) Mai(n) Un Par
Aisee Parinati Ho Jave.

May I always entertain a feeling of friendliness
For all living beings in the world;
May the spring of sympathy in my heart be ever
Bubbling for those in agony and affliction.
May I never feel angry with the vile,
The vicious and the wrongly-directed:
May there be such an adjustment of things that
I should always remain tranquil in dealing with
them!

गुणी जनों को देख हृदय में,
मेरे प्रेम उमड़ आवे।
बने जहाँ तक उनकी सेवा,
करके यह मन सुख पावे ।
होऊँ नहीं कृतघ्न कभी मैं
द्रोह न मेरे उर आवे।
गुण-ग्रहण का भाव रहे नित,
दृष्टि न दोषों पर जावे।।6।।

Gunee Jano(n) Ko Dekh Hridaya Mei(n)
Mere Prem Umad Aave;
Bane Jaha(n) Tak Unkee Seva
Karke Yeh Man Sukh Pave.
Ho-oo(n) Nahee(n) Kritaghna Kabhee Mai(n)
Droh Na Mere Ur Aave;
Guna-Grahan Ka Bhav Rahe Nit
Drishti Na Dosho(n) Par Jave.

May my heart ever overflow with love
At the sight of virtuous men;
May this mind (of mine) rejoice always
In serving them to the utmost of its power;
May I be never ungrateful;
May jealousy never approach me,
May my longing be always for
Assimilating the virtues of others; and
May the eye never alight on their faults!

कोई बुरा कहो या अच्छा,
लक्ष्मी आवे या जावे।
लाखों वर्षों तक जीऊँ,
या मृत्यु आज ही आ जावे ।
अथवा कोई कैसा ही भय,
या लालच देने आवे।
तो भी न्याय मार्ग से मेरा
कभी न पग डिगने पावे।।7।।

Koi Bura Kaho Ya Achchha
Lakshmi Aave Ya Jave;
Lakhon Varsho(n) Tak Jee-oo(n)
Ya Mrityu Aaj Hi Aa Jave.
Athva Koi Kaisa Hi Bhaya
Ya Lalach Dene Aave;
To Bhee Nyaya-Marg Se Mera
Kabhee Na Pag Digne Pave.

Let men applaud me or upbraid,
Let wealth come or depart;
Whether I live for many long decades,
Or death come just this day;
Threats of evil, however strong,
Seducements, corrupting with pelf-
May none of these, at any time,
Swerve me from the noble path!

होकर सुख में मग्न न फूले,
दुख में कभी न घबरावे।
पर्वत नदी श्मशान भयानक
अटवी से नहिं भय खावे ।
रहे अडोल अकम्प निरन्तर,
यह मन दृढ़तर बन जावे।
इष्ट-वियोग अनिष्ट-योग में,
सहन शीलता दिखलावे।।8।।

Hokar Sukh Mei (n) Magna Na Phoole
Dukh Mei (n)Kabhee Na Ghabrave;
Parvat Nadee Shmashan Bhayanak
Atvee Se Nahi(n) Bhaya Khave.
Rahe Adol Akamp Nirantar
Yeh Man Dridhatar Ban Jave;
Ishta-Viyog Anishta-Yog Mei (n)
Sahan-Sheelta Dikhlave.

Let pleasure never turn my head;
May pain disturb me never!
Nature's awesome loneliness
May never make me shiver!
Unmoved, unmoving may I remain
In hill or wood or dell,
Displaying noble moral worth
In good or bad environment!

सुखी रहें सब जीव जगत् के,
कोई कभी न घबरावे।
बैर पाप अभिमान छोड़ जग,
नित्य नये मंगल गावे ।
घर-घर चर्चा रहे धर्म की,
दुष्कृत दुष्कर हो जावें।
ज्ञान-चरित उन्नत कर अपना,
मनुज जन्म फल सब पावें।।9।।

Sukhee Rahe(n) Sab Jeev Jagat Ke
Koi Kabhee Na Ghabrave;
Bair Pap Abhiman Chhod Jag
Nitya Naye Mangal Gave.
Ghar-Ghar Charcha Rahe Dharma Ki
Dushkrit Dushkar Ho Jave(n);
Gyan Charit Unnat Kar Apna
Manuj Janma Phal Sab Pave (n).

May happiness be the lot of all;
May distress come near none;
Giving up hatred sin and pride,
May men chant hymns of joy all day!
May Dharma be practiced in every home;
May evil cease to be easily-wrought:
Increasing in wisdom and merit may all,
Realise the purpose of life-Moksha !

ईति भीति व्यापे नहिं जग में
वृष्टि समय पर हुआ करे।
धर्मनिष्ठ होकर राजा भी,
न्याय प्रजा का किया करे ।
रोग मरी दुर्भिक्ष न फैले,
प्रजा शान्ति से जिया करे।
परम अहिंसा धर्म जगत् में,
फैल सर्वहित किया करे।।10।।

Eeti-Bheeti Vyape Nahi(n) Jag Mei(n)
Vrishti Samay Par Hua Kare;
Dharma-Nishth Hokar Raja Bhee
Nyaya Praja Ka Kiya Kare.
Rog Mari Durbhiksha Na Phaile
Praja Shanti Se Jiya Kare;
Param Ahimsa Dharma Jagat Mei (n)
Phail Sarvahit Kiya Kare.

May distress and terror no longer exist;
May rains descend in good time;
The king may, too imbued with Dharma,
With even justice rule over men!
May plagues, disease and famines cease;
May people live in peace;
May the exalted ahimsa dharma prevail;
And the Gospel of Mercy become
The source of good to all!

फैले प्रेम परस्पर जग में,

मोह दूर ही रहा करे।

अप्रिय-कटुक-कठोर शब्द नहिं,

कोई मुख से कहा करे ।

बनकर सब युगवीर हृदय से,

देशोन्नति रत रहा करैं।

वस्तु स्वरूप विचार खुशी से

सब दुख संकट सहा करैं।।11।।

Phaile Prem Paraspar Jag Mei (n)
Moh Door Hee Raha Kare;
Apriya Katuk Kathor Shabda Nahi(n)
Koi Mukh Se Kaha Kare.
Bankar Sab 'Yugveer' Hridaya Se
Deshonnati Rat Raha Kare(n);
Vastu-Svaroop Vichar Khushee Se
Sab Dukh Samkat Saha Kare(n).

May mutual love prevail in the world;
May delusion dwell at a distance!
May no one ever utter offensive speech,
Or harsh, unpleasant words with his tongue!
May men, made heroes, O Jugal Kishore!
Whole-heartedly work in their country's cause!
May all understand the Laws of Truth,
And joyfully, sorrow and suffering endure!

Om; Peace: Shanti! Shanti!! Shanti!!!